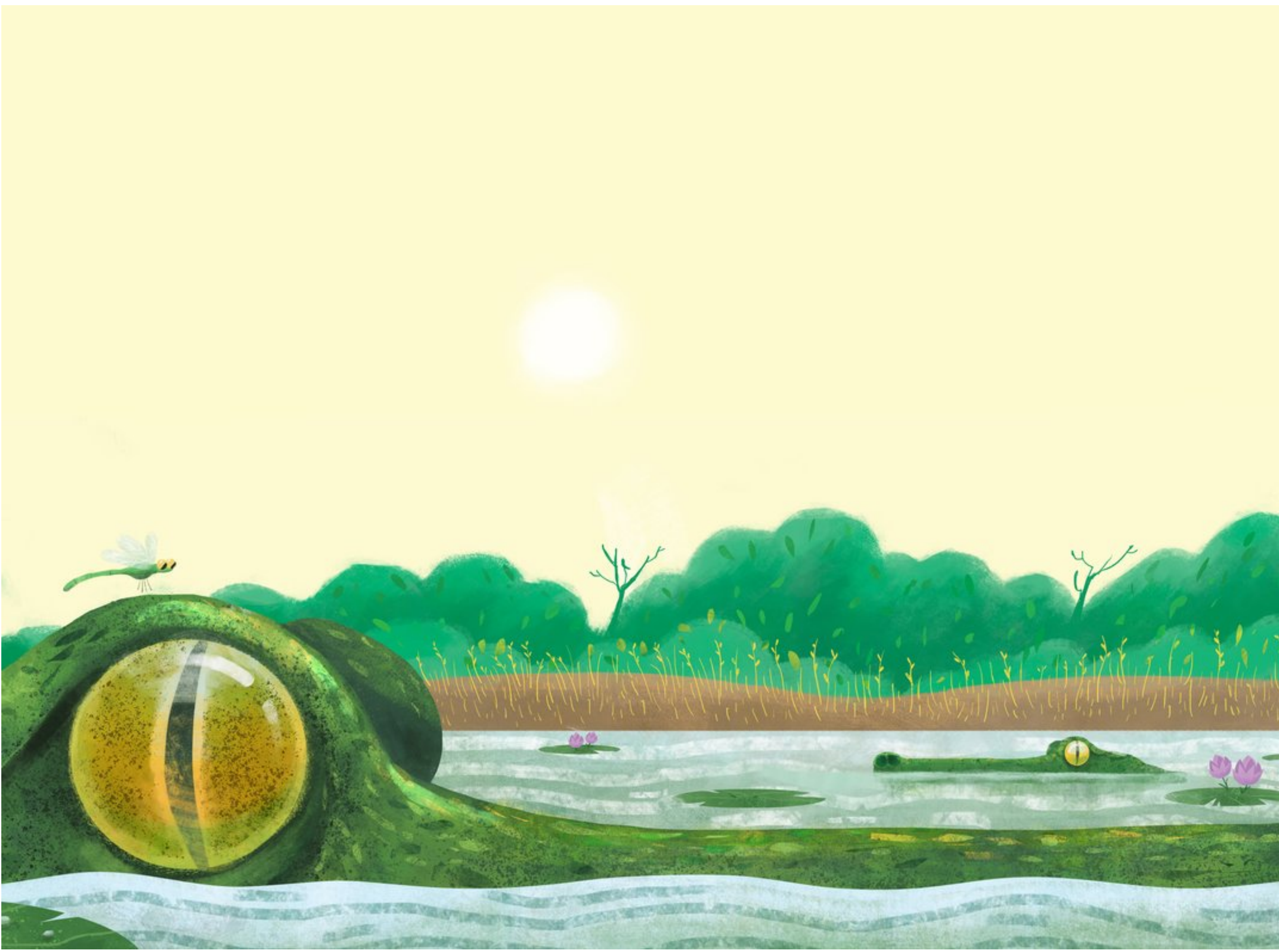


कमलाक भगता (बाल नाटक)

Author: Gajendra Thakur
Illustrators: Angie & Upesh, Ashok Sharma, Bhargavkumar Kulkarni, Debjyoti Saha, Google India, Josephine Versfeld, Jyo Ram, Natalie Edwards, Ogin Nayam, Rachel Greer, Rajiv Eipe, Rohit Kelkar, Ruchi Shah, Shiva Harini, Shruti Kraleti, Students of Himalayan Public School, Sunaina Coelho , Swathi Sambasivam

Level 4



कमलाक भगता

(बाल नाटक)

नाटककार गजेन्द्र ठाकुरक जन्म भागलपुरमे सन् १९७१ मे भेलन्हि आ आइ काल्हि ओ दिल्लीमे रहै छथि।

गजेन्द्र ठाकुर



सूत्रधार: आइ एकटा संस्कृत साहित्यक प्रसिद्ध कथापर आधारित नाटक देखा रहल छी। चोटगर कथा अछि। बच्चा आ पैघ सभक लेल। देखू ई भिखमंगा कतऽ सँ आबि रहल अछि।



दृश्य १

(गाममे घुमैत)

भिखमंगा: गरीबकेँ किछु दिअ। पुरान कपड़ा, रुपैआ, पैसा। किछुओ दिअ।

बूढ़ी: लिअ ई कपड़ा। पुरान छै मुदा जाड़मे बड्ड गरम रहै छै। ई अन्न सेहो।

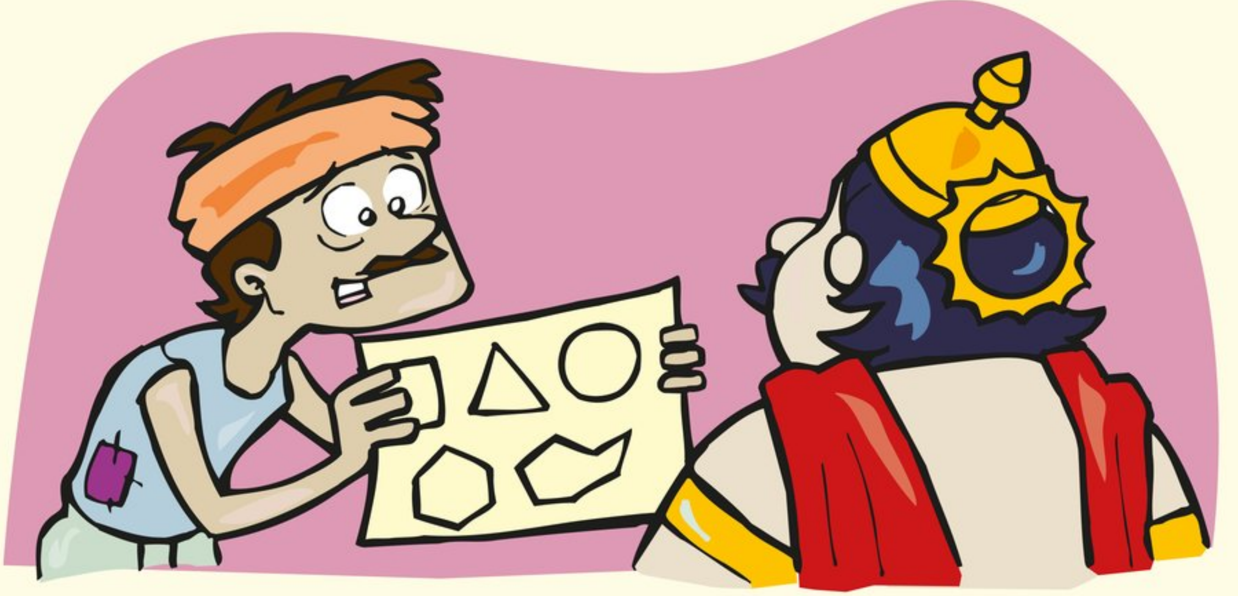


नबका कमौआ: लिअ ई पैसा। किछु कीनि लेब।
(भिखमंगा सूत्रधारक बगलसँ होइत कपड़ाक धोधरिमे अन्न रखैत अछि। पाइ गनैत अछि। फेर दोसर दिस अपन घरक खाटपर बैसैत अछि। एकटा चुकड़ीमे पाइ रखैत अछि, फेर गनैत अछि।)
भिखमंगा: (मोने-मोन) आब तँ ढेर रास पाइ भऽ गेल। मोन अछि जे कमलाक भगता बनि जनकपुर जाइ। भगवान से दिन देखेलन्हि।



दृश्य २

भिखमंगा: (बोगलीमे पाइक चुकड़ी लेने आगाँ जाइत-भोरुका समए)



चलू चलू यौ
जनकपुरमे कमलाक भगता
करू करू यै
कमला माइ करू हमर उद्धार
चलू चलू यौ जनकपुर
भगता बनि कमलाक



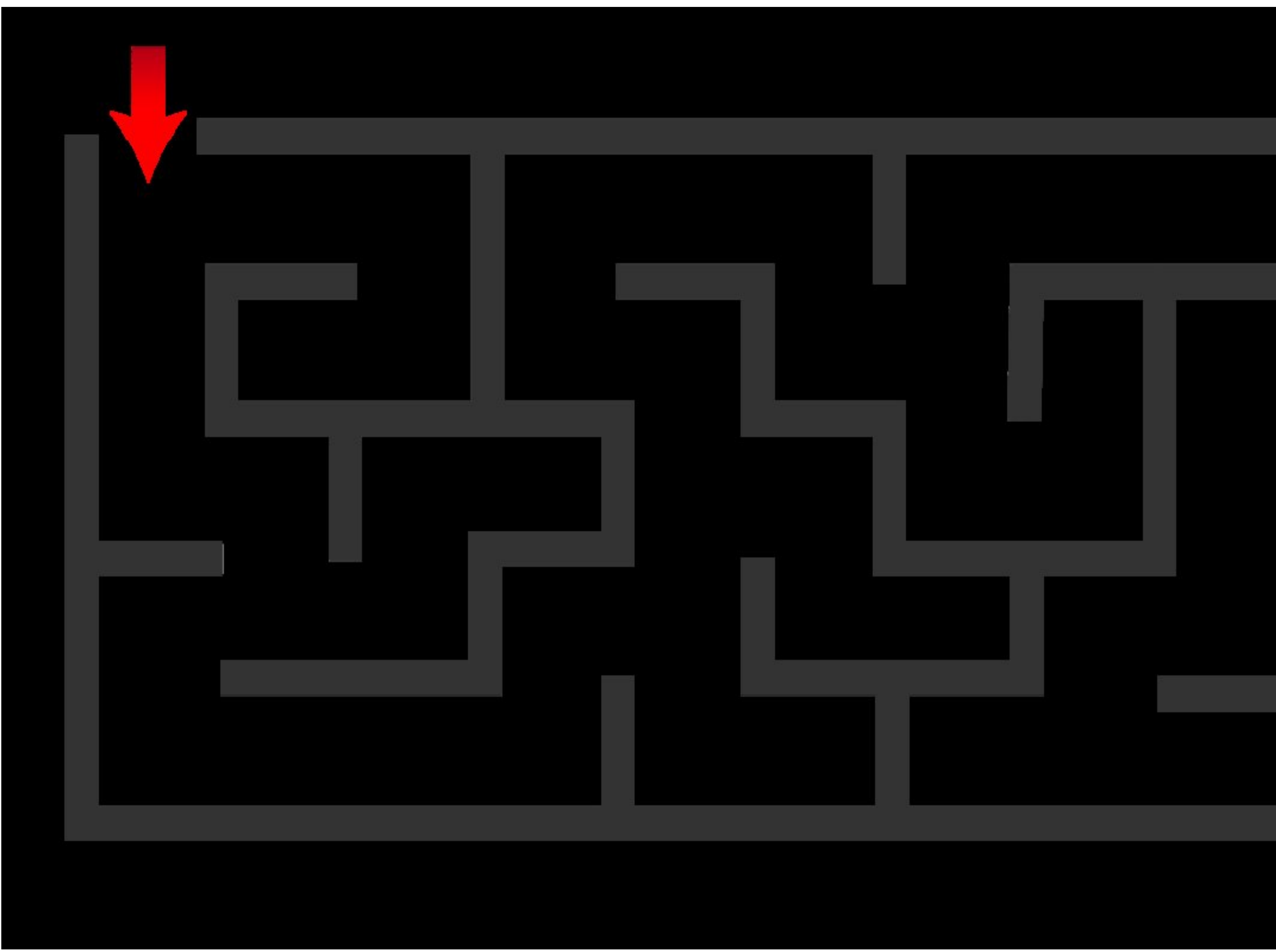
(सोझाँ बालुसँभरल कमलाक तट। भिखमंगा सोचैत अछि।)-अहा। की विस्तार अछि कमलाक। मुदा एतेक भोरमे कियो एतए नहि अछि। चलू पाइक चुकड़ी कातमे राखि डूम दऽ आबी।

(पाइक चुकड़ी नीचाँ रखैत अछि आ नहाइ लेल बिदा होइत अछि।)

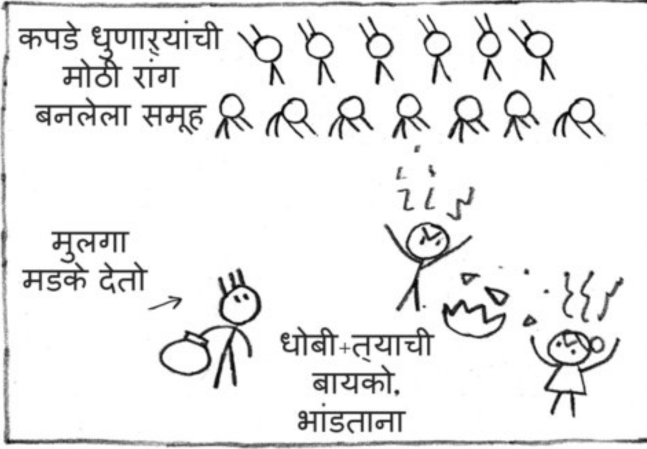
(मोने-मोन सोचैत)- मुदा कियो जे देखि जाएत आ ई पाइ लऽ लेत तखन? एकरा बालुमे नुका दैत छिऐक।

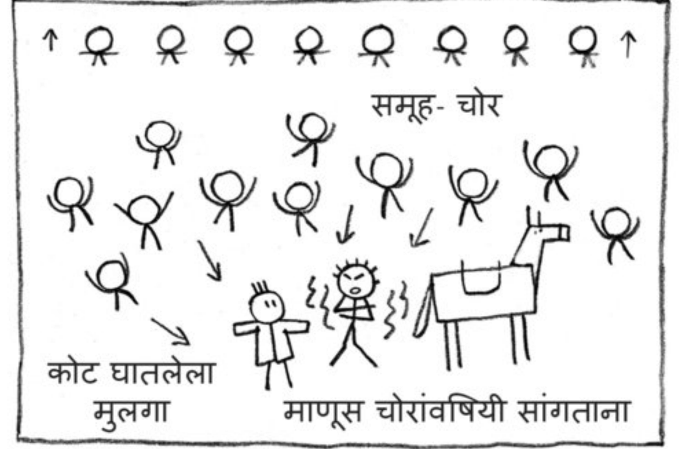


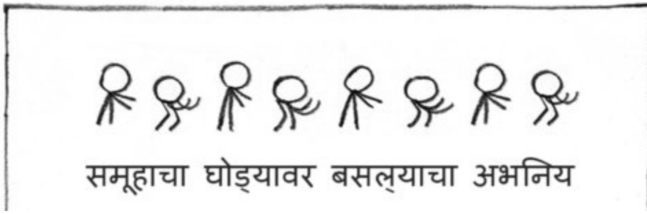
(बालु कोड़ि कऽ चुकड़ी नुकबैत अछि।)
(फेर मोने-मोन सोचैत) मुदा जे कियो ई देखि जाएत तखन?
मुदा देखत कोना आब। तेना कऽ नुका देने छिऐक जे आब हमरो नै भेटत।
(फेर सोचैत घुरि अबैत अछि।)
मुदा हम जे नहा कऽ आएब तँ कतऽ ई पाइ गाड़ल अछि से हमरो कोना बूझऽ मे आएत। ठीक छै।
(कोड़लाहा स्थानपर अबैत अछि।)

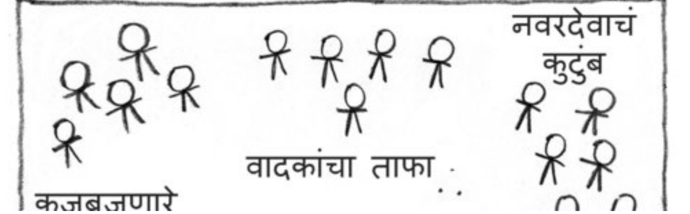


एतऽ शिवलिंग बना दै छिऐ। (कोड़लाहा स्थलपर पएर रखैत अछि आ पएरक चारू कात बालु राखए लगैत अछि। चारू कातसँ बालु भरि गेलाक बाद आस्तेसँ पएर हटा लैत अछि आ नीक-नहाँति शिवलिंग बना दैत अछि। फेर निश्चिन्त मोनसँ कमला-स्नानक लेल बिदा भऽ जाइत अछि। एम्हर ओ धार दिस बिदा होइत छथि आ ओम्हर दूरसँ किछु आर स्नानार्थी, पुरुष हाथमे धोती आ महिला हाथमे नुआ लेने, अबैत दृष्टिगोचर होइत छथि।)





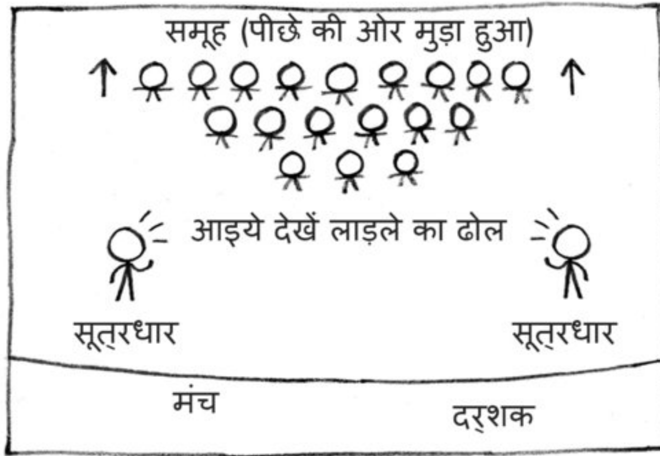




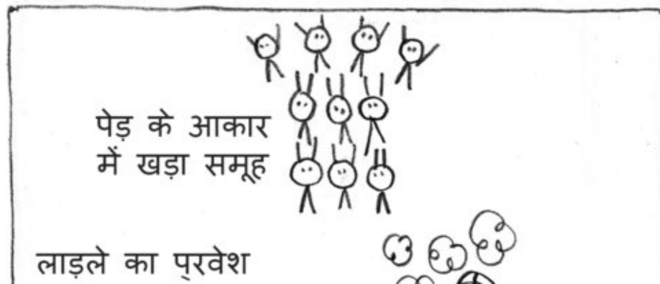
(मोने-मोन सोचैत) नीके भेल जे फुरा गेल। कएक सालक कमाइक छी ई पैसा। ई लोक सभ आब स्नान करबा लेल आबि रहल अछि। ने जानि ककर मोनमे खोट हेतै आ ककर मोनमे नै।

(नहाइ लेल मंचसँ नीचाँ धारमे फाँगि जाइत अछि।)

पुरुष स्नानार्थी - (अपन कपड़ा लत्ता राखै अए) चली कमलामे डूम दऽ आबी।









स्त्री स्नानार्थी- (भिखमंगा द्वारा बनाओल शिवलिंग दिस इशारा करैत) हे देखियौ ओ शिवलिंग। लागैए एतऽ स्नान करबाक पहिने शिवलिंग बनेबाक विधान छै।

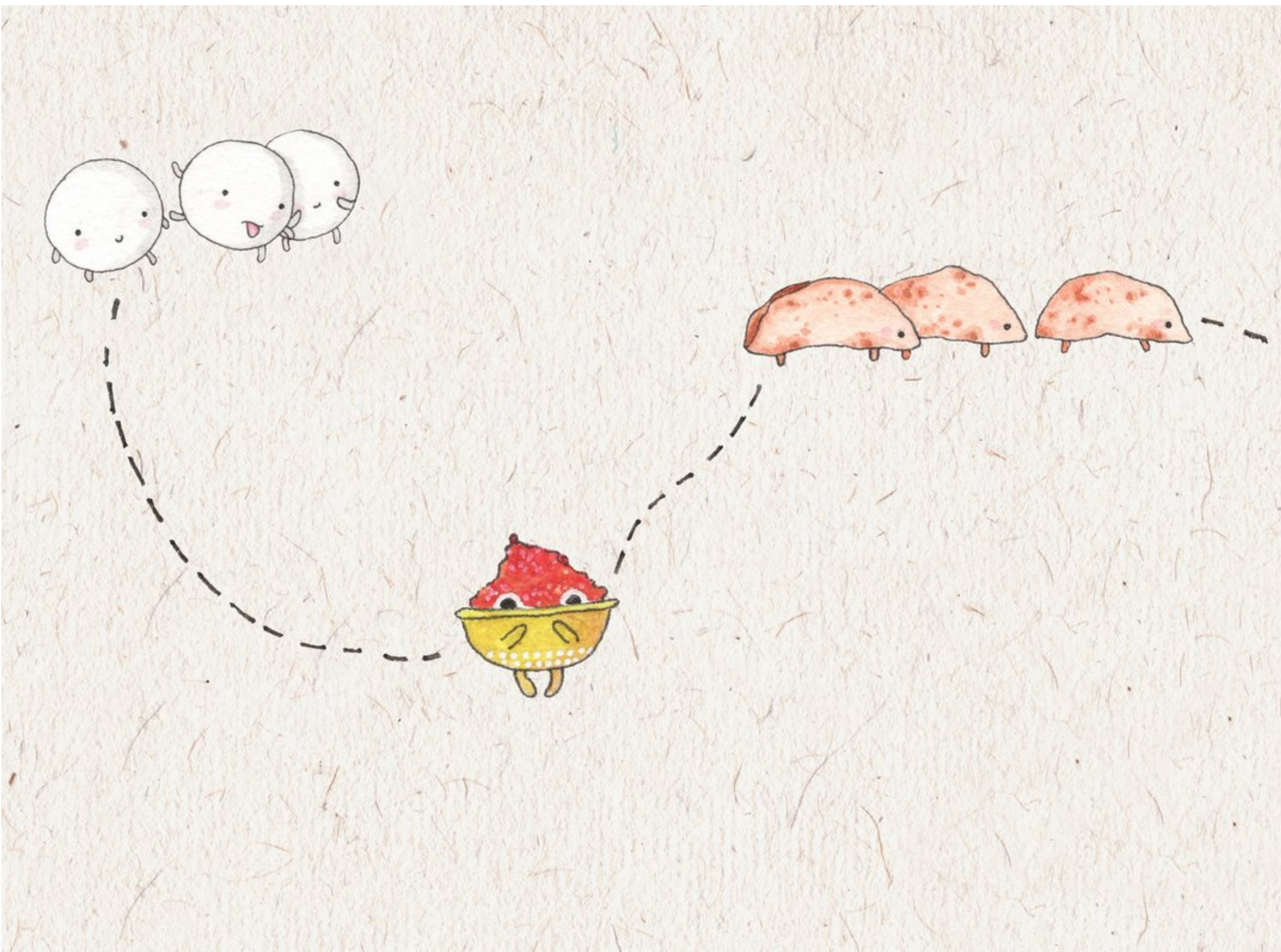
पुरुष स्नानार्थी- अपना सभ दिस, गंगा कातमे तँ एहेन कोनो परम्परा नै छै।



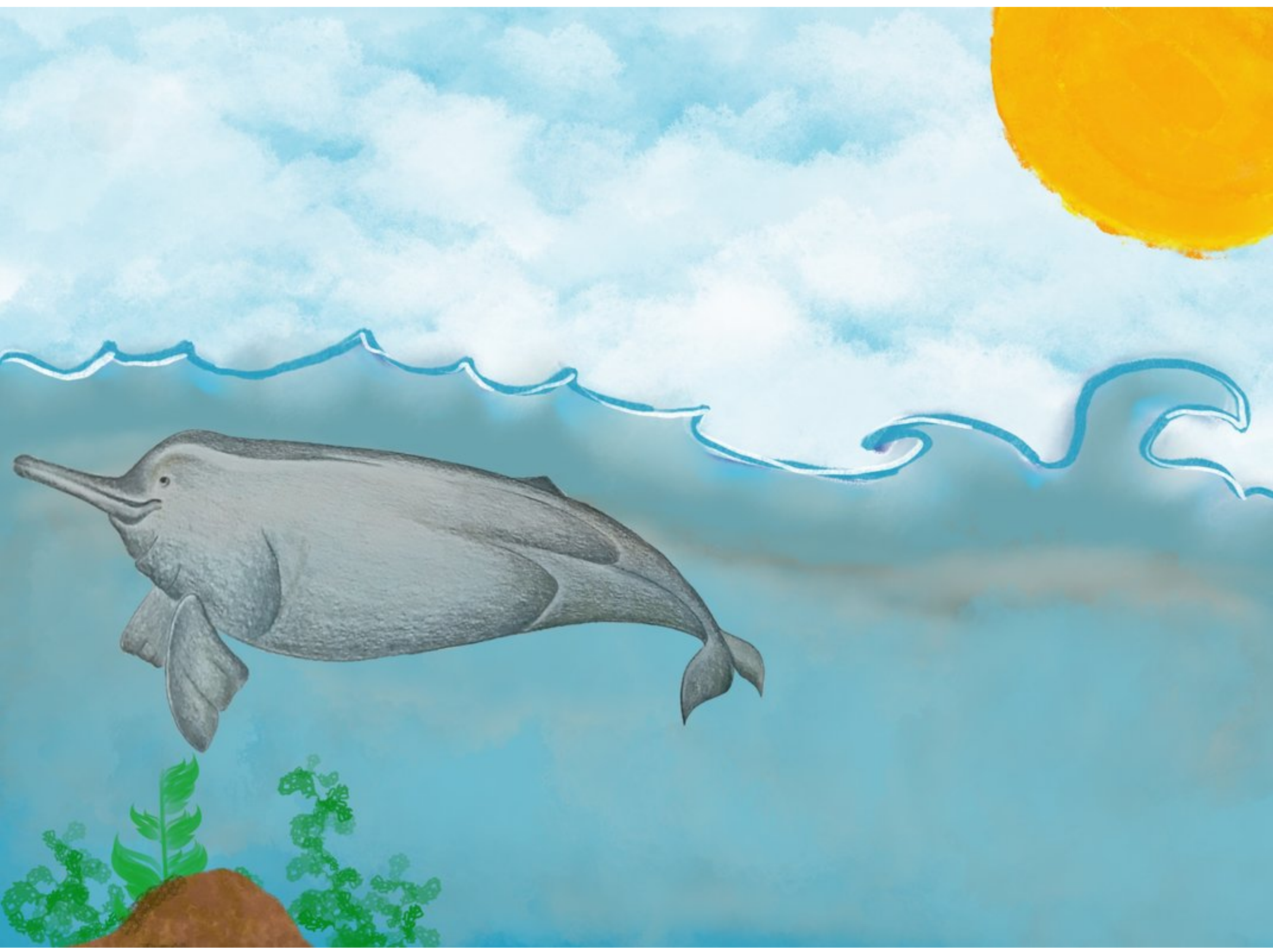
स्त्री स्नानार्थी- एत्तऽ मुदा छै। आ भोलाबाबाक स्थापना कऽ डूम लै मे हर्जे की।
पुरुष स्नानार्थी- हँ से तँ ठीके।



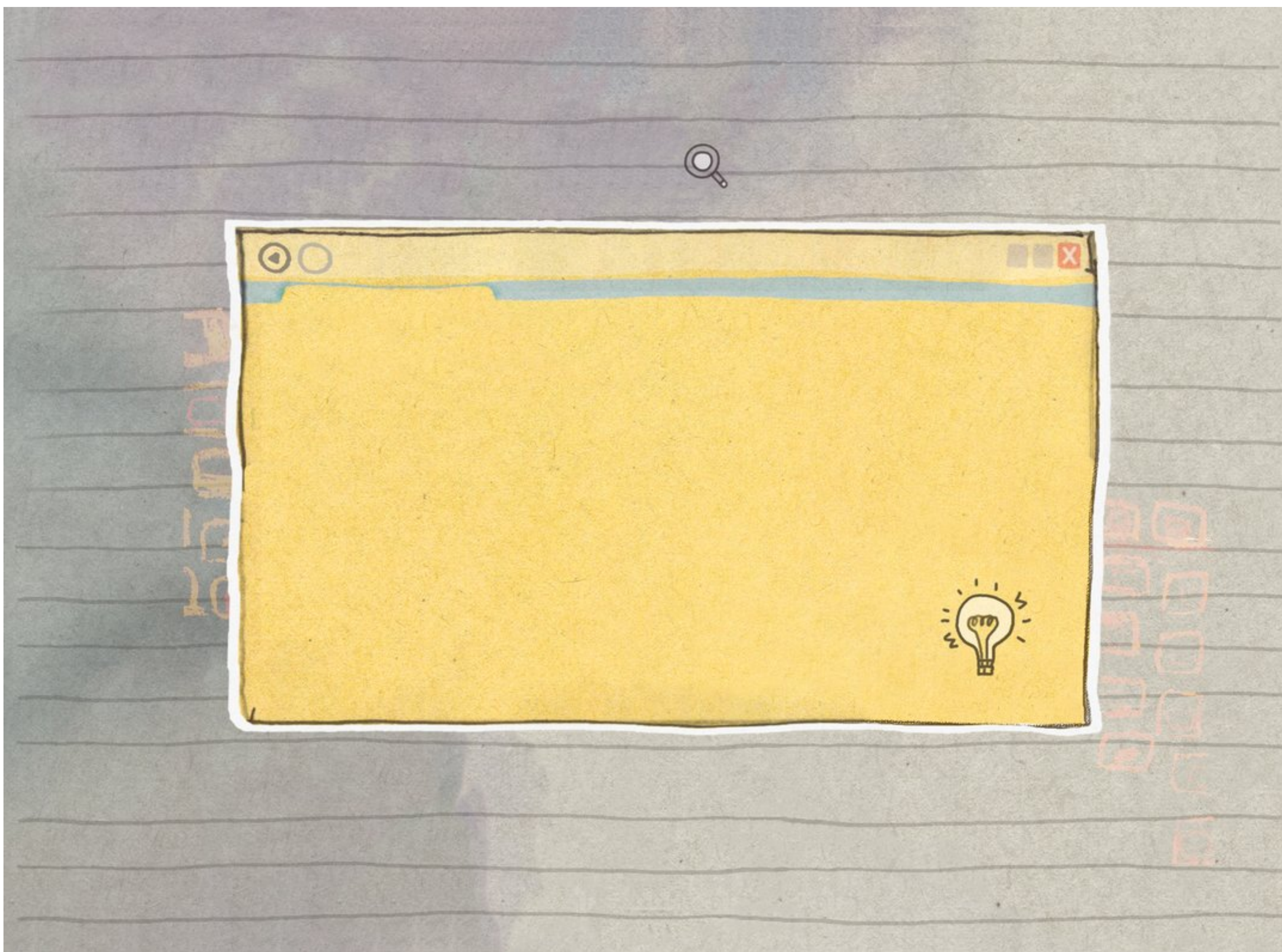
(दुनू गोटे एक-एकटा शिवलिंगक स्थापनामे लागि जाइत छथि। पएरक चारूकात बालु चढ़बऽ लगै छथि। तावत् आनो लोक सभ आबि कऽ किछु पूछऽ लगै छथि आ अच्छा-अच्छा कहि ओहो सभ एक-एकटा शिव लिंगक स्थापनामे अपन-अपन पएरक चारू कात बालु चढ़बए लगै छथि। कनिये कालमे मंचपर शिवलिंगे-शिवलिंगे भरि जाइत अछि। मंचपर हर-हर महादेवक स्वरसँ अनघोल भऽ जाइए।)



भिखमंगा: (नहा कऽ निकलैत) देखू, जखन आएल रही तँ एकोटा लोक नहि छल आ आब देखू कतेक भीड़ भऽ गेल। हमरा की। जोगी छी, बहैत पानि सन। ई अंगवस्त्र रस्तेमे सुखा जाएत। जए माँ कमलेश्वरी। कमलाक भगता बनि चली आब जनकपुर। मुदा ओ चुकड़ी तँ लऽ ली।



(अपन बनाओल शिवलिंग ताकऽ लगैत अछि। मुदा चारू कात शिवलिंगे-शिवलिंग। एक दूटा शिवलिंगकेँ भखराबैत अछि मुदा ओहि नीचाँसँ किछु नहि बहराइत अछि।)
(भिखमंगा माथपर हाथ राखि मंचपर बैसि जाइत अछि आ आस्ते-आस्ते मंचपरसँ प्रकाश विलीन भऽ जाइत अछि।)
(पटाक्षेप)





Story Attribution:

This story: कमलाक भगता (बाल नाटक) is written by Gajendra Thakur . © Gajendra Thakur , 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Cover page: Some people around a river, by Google India © Google, 2021. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: Gharials in the river, by Debjyoti Saha © Pratham Books, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: People washing clothes by the river bank, by Bhargavkumar Kulkarni © Pratham Books, 2021. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: By the banks of a river, by Rohit Kelkar © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: Animals on a river bank, by Rachel Greer © African Storybook Initiative, 2016. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: The guard drives the begger away, by Angie & Upesh © Pratham Books, 2008. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: The begger explains shapes to the king, by Angie & Upesh © Pratham Books, 2008. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: Children building a sand castle, by Josephine Versfeld © Book Dash, 2021. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Sand balls and seashells, by Sunaina Coelho © Pratham Books, 2017. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: DOG running away, by Shiva Harini © Shiva Harini, 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: Stage setting Marathi 2, by Rajiv Eipe © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Images Attributions:

Page 12: Stage setting Hindi, by Rajiv Eipe © Pratham Books, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A play on stage, by Ashok Sharma © Pratham Books, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: shiva, by Jyo Ram © Jyo Ram, 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: Assorted food, by Ogin Nayam © Pratham Books, 2019. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: Ganges River Dolphin!, by Shruti Kraleti © Shruti Kraleti, 2022. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 17: Blank colour page, by Natalie Edwards © Book Dash, 2015. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: A blank board, by Ruchi Shah, Students of Himalayan Public School © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: Colourful papers folding, White blank sheet with blue borders, by Swathi Sambasivam © StoryWeaver, 2020. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

कमलाक भगता (बाल नाटक)

(Maithili)

ई अंगवस्त्र रस्तेमे सुखा जाएत। जए माँ कमलेश्वरी। कमलाक भगता बनि चली आब जनकपुर। मुदा ओ चुकड़ी तँ लऽ ली।......

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.



Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!